कोई भी चित्र समझा सकते हैं जैसे विनाश काले यादव, कौरव और पाण्डव वाले चित्र हैं। इस पर जाए समझाए कि भगवानुवाच्य इस समय सृष्टि पर कौन–2 सी सेनाएँ खड़ी हैं। यूरोपवासी यादव जिन्होंने मूसल निकाले, अपने कुल का विनाश किया या करने। 5000 वर्ष पहले भी यही बॉम्बस थे जिससे यूरोपवासी यादव कुल का विनाश हुआ था। कोई भी चित्र उठाए उस पर समझाना चाहिए कि हम होते तो प्रदर्शनी ऐसे समझाते। यह मूसल महाभारत लड़ाई के समय के मशहूर हैं। साइंस घमंड से निकाले हैं। बुद्धि से निकाले हैं। यह काम में ज़रूर आवेंगे। रख नहीं सकते हैं। रख कर क्या करेंगे! दाम खाया हुआ है। इस्तेमाल करने ही होंगे। 5000 साल पहले भी मूसल निकाल अपने कुल का विनाश किया था। आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना होती है। और का विनाश होना चाहिए। कौरव–पाण्डव, असुर और देवताओं की युद्ध तो है नहीं। बाप बैठ समझाते हैं कि यवनों का राज्य था थोड़े ही। यह तो पाकिस्तान अभी बना है। अनेक राजधानी बन गई हैं। पाण्डव–कौरव नहीं लड़े। यवनों की लड़ाई है। नैचरल कैलेमिटीज़ से भी विनाश होना है। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जाग्राफी चेंज होनी है। नई दुनिया ज़रूर चाहिए। तो ऐसे–2 समझाना पड़े। एक चित्र पर समझाया फिर दूसरा चित्र। यह योग में बैठे हैं, बुद्धि बाप के साथ है। भगवानुवाच्य है माम् एकम् याद करो। मैं पतित–पावन हूँ, कृष्ण नहीं है। भगवान को गाइड–लिबरेटर कहा जाता है। गाइड किसको करेंगे? पवित्र आत्माओं को ले जावेंगे। सबको कहते हैं देह के धर्म छोड़ो। अपने को आत्मा निश्चय करो तो पावन बन जावेंगे। नहीं तो हिसाब–किताब चुक्तू कर वापस जावेंगे। पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना हो रही है। हम बाप को याद करते हैं, माया भूला देती है। भारत का योग मशहूर है। अच्छा, फिर और चित्र। जब कोई बीमार पड़ते हैं तो पीछे (गैस) पर चलते हैं। अब भारत का भी यही हाल है। बाप ने समझाया अमृत पियो, विख छोड़ो। यह विख माँगते हैं, हम पवित्र बनना चाहते हैं। सतयुग में थी ही वाइसलेस दुनिया। योगबल से क्या नहीं हो सकता है। चित्रों पर समझाने की यहाँ रोज़ प्रैक्टिस करनी चाहिए। उन्नति भी होगी। बहुत चित्र हैं। त्रिमूर्ति पर भी समझा सकते हैं। सारी हिस्ट्री–जाग्राफी आ जाती है। ऐसे–2 प्रैक्टिस करने से मुख खुल जावेगा। रूहानी सर्विस के लायक बन जावेंगे। अपनी उन्नति भी करेंगे। भूतों को भी भगाना है। बाबा जब बाहर जावेंगे, कब भी किसी को अलाउ नहीं करेंगे। दिन–प्रतिदिन स्टिक होते जावेंगे। कोई आकर बकवाद करे, ठीक नहीं। तुमको उनसे वाद–विवाद नहीं करना है। सब सब्जेक्ट्स में होशियार होना चाहिए। दिन–प्रतिदिन उन्नति को पाना चाहिए। बहुत सेन्टर्स ऐसे हैं जो ब्राह्मणी बदली हो जाती है तो लूले–लंगड़े हो जाते हैं। समझाना सीख जावेंगे तो ऐसे नहीं कहेंगे कि हमको फलानी ब्राह्मणी चाहिए। मुख्य है ही सीढ़ी का चित्र। ल०ना० का चित्र, बाबा ख्याल कर रहे हैं कि ल०ना० का चित्र छपावें। 3×4 साइज़ में हम छपा सकते हैं। कोई ना कोई जाग पड़ेंगे। बाबा लिख देंगे अच्छा करके छपाओ। प्रदर्शनी डिपार्टमेंट को बुद्धि चलानी चाहिए। कौन–2 से चित्र ज़रूरी है वो फिर छपाए भी सकते हैं। नहीं तो बाबा समझेंगे कोई सेन्सीबुल बच्चे नहीं हैं। बाबा कहें कि मुख्य ज़रूरी–2 छोटे–2 चित्र छोटे सेन्टरों को भी मिल जावें तो वो भी सीखें। समझाने वाले आइडिया भी दे सकते हैं। बाबा, यह चित्र भी होने चाहिए। नम्बरवार चित्र भी हैं। बाबा लिखेंगे, छोटे सेन्टर्स लिए छोटे बनाओ। बड़े सेन्टर्स के लिए ट्रांसलाइट के भी बना सकते हैं। प्रदर्शनी कमेटी का ख्याल चलता रहना चाहिए। देहली में स्वदर्शन बच्चा अच्छा है। उनकी बुद्धि अच्छी है। तो चित्रों पर भी ध्यान देना चाहिए। बाबा समझेंगे अच्छे बाबा के मददगार हैं। दिल पर भी चढ़ेंगे। रोज़ चित्रों पर अभ्यास कर समझो... शरीर भी बहुत वैल्युएबुल है। जां जीना है तां ज्ञानामृत पीना है। लूला हो, लंगड़ा–बोड़ा, यह सब कमाई कर सकते हैं अपने भविष्य के लिए। भले सोया पड़ा हो। मुरली सुनानी चाहिए। क्लास करने लिए हुल्लास होना चाहिए। बीमार हो तो उनको जाकर गीता सुनानी चाहिए। शिवबाबा कहते हैं माम् एकम् याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। सर्विस का शौक होना चाहिए।

नोटः– जयपुर में तिलक नगर वाला सेन्टर है जो उसमें जयपुर के साथ चार नम्बर भी लिखना है। आज–कल वहाँ नम्बर सिस्टम चालू हुई है; इसलिए ध्यान रहे जी। अच्छा, अब विदाई।